THE RESEARCH DIALOGUE
An Online Quarterly Multi-Disciplinary
Peer-Reviewed / Refereed Research Journal
ISSN: 2583-438X
© The Research Dialogue | Volume-05 | Issue-02 | July-2026
Available online at: https://theresearchdialogue.com/
DOI : https://doi.org/10.64880/theresearchdialogue.v5i2.29

नगरीकरण की समस्याओं का जीवन गुणता पर प्रभाव एवं उसके संभावित समाधानों का भौगोलिक अध्ययन: बिजनौर नगर के विशेष संदर्भ में

ऋतु सैनी[1], प्रो. महिपाल सिंह[2]
[1]शोधार्थी, भूगोल विभाग, वर्धमान कॉलेज, बिजनौर (उ. प्र.)
[2]शोध निर्देशक, विभागाध्यक्ष, भूगोल विभाग, गुलाब सिंह हिन्दू पीजी कॉलेज, चांदपुर सियाऊ, बिजनौर (उ. प्र.)
[1]**Email:** sainiritu1112@gmail.com

शोध सार –

उन्नीसवीं सदी में औद्योगिक क्रांति के फलस्वरूप नगरीकरण ने रफ्तार पकड़ी। वास्तव में नगरीकरण वह प्रक्रिया है जिसके अंतर्गत ऐसे अधिवासों का विकास सम्मिलित है जिनकी प्रकृति मूलतः ग्रामीण है किंतु समय के साथ हुए क्रमिक विकास द्वारा नगरों में परिवर्तित हो गए हैं। नगरीकरण वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा नगरीय क्षेत्रों में जनसंख्या प्रवास व उससे संबंधित व्यावसायिक संरचना में बदलाव होता है। भारत जनसंख्या वृद्धि के साथ-साथ नगरीय जनसंख्या में भी बहुत तेज़ी के साथ वृद्धि कर रहा है। नगरीकरण का विकास उत्तरोत्तर उस नगर में अनेक समस्याओं को जन्म देता है। बिजनौर शहर जिला बिजनौर का मुख्यालय है। यह एक मध्यम श्रेणी का शहर है। प्रस्तुत शोध पत्र का मुख्य उद्देश्य बिजनौर शहर की मुख्य समस्यायों का विश्लेषण करना एवं उन समस्याओं के संभावित समाधानों की तलाश कर भविष्य की योजनाओं का निर्माण करना है। अध्ययन के लिए प्राथमिक एवं द्वितीयक दोनों श्रेणी के आँकड़ों का उपयोग किया गया है। प्राथमिक आंकड़ों के लिए गूगल फॉर्म आधारित प्रश्नावली के माध्यम से बिजनौर नगर के 100 लोगों का डेटा एकत्रित किया गया। शोध अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि जितनी तीव्रता से बिजनौर नगर में जनसंख्या की वृद्धि हुई है उतनी तीव्रता से नगर की आधारभूत सुविधाओं का विकास नहीं हो पाया है। शोध अध्ययन शहरी नियोजन के लिए वैज्ञानिक तकनीक, ठोस अपशिष्ट का वैज्ञानिक प्रबंधन एवं उचित निस्तारण, वर्षा जल का संरक्षण, हरित क्षेत्रों का विकास एवं जन सहभागिता से नगर की समस्याओं का विवेकपूर्ण समाधान किए जा सकने का पक्ष भी सामने लाता है। इससे एक ओर तो भविष्य में होने वाली नगरीकरण की समस्याओं का समाधान होगा वहीं दूसरी ओर यह बिजनौर शहर में रहने वाले लोगों की जीवन गुणता अर्थात गुणवत्ता में भी सुधार करने में सक्षम होगा।

मूल शब्द – नगरीकरण, प्रवास, व्यावसायिक संरचना, जीवन गुणता, सतत विकास।

प्रस्तावना-

प्राचीन काल से ही भारत में विकसित एवं अल्प विकसित नगर अस्तित्व में रहे हैं। प्राचीन शहर हों या आधुनिक शहर सभी का विकास कुछ विशेष परिस्थितियों में हुआ। किसी भी शहर के विकास के लिए कुछ मूलभूत आवश्यकताएं होती हैं। एंडरसन का मानना है कि नगरों का विकास नित्य नए आविष्कारों और परिवर्तनों के कारण हुआ। एन कारपेंटर ने बताया कि अनुकूल जलवायु, खाद्यान्न उत्पादन, सुरक्षा, सुरक्षित बसाव स्थलों ने नगरों के

विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। समय के साथ बढ़ते औद्योगीकरण, तकनीकी का विकास एवं परिवहन सुविधाओं ने नगरीकरण को और अधिक तीव्रता प्रदान की। जैसे-जैसे नगरों का विकास हुआ वैसे-वैसे नगरों से जुड़ी समस्याएं भी दृष्टिगोचर होने लगीं। नियोजन रहित विकास, मूलभूत सुविधाओं की कमी, प्रदूषण तथा संसाधनों पर बढ़ते दबाव ने नगरीय जीवन को बहुत अधिक प्रभावित किया। भारत भी नगरीकरण में तीव्रता से होने वाले विकास से अछूता नहीं रहा। वर्तमान समय में भारत की जनसंख्या विश्व में सर्वाधिक है। 2011 की जनगणना के अनुसार भारत की 31.16% लगभग 37.71 करोड़ जनसंख्या शहरों में निवास करती है। (जनगणना, 2011)। पिछले डेढ़ दशक में बिजनौर नगर की जनसंख्या में भी उत्तरोत्तर वृद्धि हुई है। 2011 की जनगणना में जिस नगर की आबादी लगभग एक लाख थी वह वर्तमान में दो लाख से ऊपर पहुंच गई है। कालांतर में बिजनौर नगर ग्रामीण पलायन के दबाव के कारण अनेकानेक समस्याओं से घिरता चला गया। मात्र 25 वार्डों वाले नगर को वर्ष 2023 के परिसीमन के पश्चात 32 वॉर्डों में विभाजित किया गया है। वर्तमान शहर में जनसंख्या वृद्धि के कारण में प्रशासनिक, व्यापारिक, अकादमिक एवं अन्य केंद्र तेज़ी से बढ़े हैं जिनके परिणामस्वरूप नगर के समक्ष आवास, यातायात जाम, नागरिकों की सुरक्षा, स्वच्छता तथा प्रदूषण जैसी समस्याएं उत्पन्न हो गई हैं।

अध्ययन क्षेत्र का परिचय -

बिजनौर नगर की भौगोलिक अवस्थिति 29°22'19.88"N से 78°8'10.75"E देशांतर के मध्य है। बिजनौर नगर से होकर राष्ट्रीय राजमार्ग संख्या NH 34 एवं NH 709 AD गुज़रते हैं। इसकी अवस्थिति गंगा-रामगंगा के दोआब में होने के कारण यह उर्वरा दोमट मिट्टी से परिपूर्ण है। यहां होने वाली गन्ने की गहन खेती के कारण यह चीनी के कटोरे के रूप में जाना जाता है। नगर की जलवायु निवास के अनुकूल है। नगर में जनवरी माह का औसत अधिकतम तापमान 21 डिग्री सेल्सियस तथा औसत न्यूनतम तापमान 10 डिग्री सेल्सियस तक रहता है। इसी के साथ जुलाई माह का औसत अधिकतम तापमान 34 डिग्री सेल्सियस तथा औसत न्यूनतम तापमान 27 डिग्री सेल्सियस तक रहता है। बिजनौर नगर की आबादी वर्ष 2011 की जन गणना के आधार पर 93297 थी किन्तु एक जनवरी 2020 को नगर विकास विभाग उत्तर प्रदेश द्वारा जारी अधिसूचना के अनुसार बिजनौर नगर का सीमा विस्तार किया गया। बिजनौर नगर में उसकी सीमा से लगने वाले 14 गांवों को सम्मिलित किया गया। वर्तमान में नगरपालिका निर्वाचक नामावली 2023 के आधार पर संभावित जनसंख्या 209913 आंकलित की गई। (राज्य निर्वाचन आयोग, उत्तर प्रदेश) विगत सोलह वर्षों में बिजनौर नगर के क्षेत्रफल की वृद्धि के साथ वर्ष 2011 की जनगणना की तुलना में वर्ष 2023 में लगभग 125 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की गई।

अध्ययन का उद्देश्य –

प्रस्तुत शोध पत्र के शोध उद्देश्य निम्नवत हैं-

1. बिजनौर नगर की प्रमुख समस्याओं को पहचानना
2. प्राप्त समस्याओं के कारणों का विश्लेषण करना
3. प्राथमिक आंकड़ों के आधार पर बिजनौर नगर के निवासियों के दृष्टिकोण का अध्ययन करना
4. बिजनौर के नगरीय विकास के लिए उचित संभावित समाधान खोजना

शोध पद्धति –

अध्ययन के लिए प्राथमिक एवं द्वितीयक आंकड़ों का प्रयोग किया गया है। प्राथमिक आंकड़ों के एकत्रीकरण के लिए गूगल फॉर्म के माध्यम से प्रश्नावली तैयार की गई, जिसके द्वारा बिजनौर नगर के कुल 32 वार्डों के 100 निवासियों से डेटा संग्रह किया गया। प्राप्त आंकड़ों को सारणीबद्ध कर निष्कर्ष निकाले गए। व्यक्तिगत साक्षात्कार के मध्यम से प्राप्त आंकड़ों को पुन: सत्यापित किया गया। द्वितीयक आंकड़ों के लिए जनगणना रिपोर्ट 2011, संबंधित शोध पत्र एवं पुस्तकें, नगरपालिका बिजनौर द्वारा प्राप्त अभिलेखों का अध्ययन किया गया। उत्तरदाताओं से प्राप्त आंकड़ों को प्रतिशत, तालिका एवं ग्राफ के माध्यम से विश्लेषित किया गया।

संबंधित साहित्य का अध्ययन -

भगत (2011) ने भारतीय नगरीय प्रतिरूपों का अध्ययन करते हुए बताया कि नगरों में जनसंख्या की तेज़ी के साथ वृद्धि के कारण अनेक समस्याएं उत्पन्न होती हैं। इनमें अनियोजित आवास, यातायात, पेयजलापूर्ति एवं साफ-सफाई की समस्या प्रमुख है। उन्होंने अपने अध्ययन में यह निष्कर्ष भी निकाला कि बड़े शहरों की अपेक्षा मध्यम एवं छोटे शहरों में मूलभूत सुविधाओं की अपेक्षाकृत जनसंख्या अधिक तेज़ी से बढ़ती है। जिसका दीर्घकालिक प्रभाव यह होता है कि नगर के निवासियों का जीवन स्तर घट जाता है। रामचंद्रन (1997) ने भारत में नगरीकरण तंत्र का विस्तारपूर्वक अध्ययन करके बताया कि शहरों में जनसंख्या का बढ़ता दबाव परिवहन एवं पर्यावरणीय प्रदूषण की चुनौतियां पैदा करता है। उन्होंने अपने शोध में यह भी पाया कि शहरों का अनियोजित बसाव इन समस्याओं को उत्पन्न करता है। उन्होंने बताया कि शहरों के उचित नियोजन के द्वारा लगातार बढ़ती इन समस्याओं से निजात पाई जा सकती है। कुंदु (2011) ने भारत में शहरीकरण की प्रकृति तथा कार्यविधियों का मूल्यांकन किया। उन्होंने कहा कि आर्थिक विकास की प्रक्रिया से कालांतर में नगरों का विकास हुआ। उन्होंने पाया कि अंतर्नगरीय स्तर पर विकास में अंतर पाया जाता है। उनके अनुसार झुग्गी बस्तियों की अवस्थिति, रोज़गार की अनुपलब्धता, आधारभूत ढांचे की कमी सतत शहरी विकास के सामने चुनौती पैदा करती है। सिंह (2015) ने कहा कि शहरी विकास एवं जीवन की गुणवत्ता के मध्य परस्पर संबंध पाया जाता है। उन्होंने शहरों के नियोजीकरण पर बल दिया और कहा कि भविष्य में शहरों को पूर्ण नियोजित तरीके से बसाने की आवश्यकता है। सदाशिवम एवं तबस्सु (2016) ने अपने शोध पत्र में बताया कि शहरीकरण प्रत्येक देश में एक साथ एक ही समय में अवसर और चुनौतियां दोनों पैदा करता है। उन्होंने भी अपना ध्यान बुनियादी ढांचे के विकास की ओर आकर्षित किया। साथ ही उन्होंने ग्रामीण लोगों के लिए शहरीकरण के मायने एवं विकसित देशों के समक्ष अरबन ट्रांजिशन को संभालने की योग्यता की बात की। कुदुस एवं अन्य (2020) ने अपने शोध पत्र में बताया कि शहरीकरण केवल आर्थिक संपन्नता एवं विकास का पर्यायवाची नहीं है बल्कि यह अपने साथ सामाजिक आर्थिक एवं अनेक स्वास्थ्य संबंधी समस्याएं भी पैदा करता है। उन्होंने अपने अध्ययन में पाया कि नगरीकरण रिच एंड पुअर डिवाइड की स्थिति पैदा करता है। नगर एक ऐसा स्थान है जहां अमीर बहुत अमीर तथा गरीब बहुत गरीब होता है। परिणाम स्वरुप ऐसे लोग स्वास्थ्य सुविधाओं तक अपर्याप्त पहुंच, कुपोषण एवं गंदे एवं सुविधा रहित आवास में रहने को मजबूर हैं।

शोध अध्ययन का औचित्य :

साहित्य समीक्षा से स्पष्ट होता कि विश्व एवं भारत में नगरों की समस्याओं पर अनेक शोध हुए हैं किन्तु अधिकांश शोध महानगरों अथवा उच्च श्रेणी के नगरों पर हुए हैं। ऐसे में मध्यम श्रेणी वाले नगर बिजनौर के शोध अध्ययन की उपादेयता सार्थक हो जाती है। बिजनौर नगर के एक बड़ा औद्योगिक नगर नहीं होने के कारण यहां निवास करने वाली अधिकांश जनसंख्या तृतीयक क्षेत्र में लगी हुई है। जनसंख्या का लगभग नगण्य प्रतिशत ही प्राथमिक क्षेत्र से जुड़ा है। किसी भी शहर में पाई जाने वाली असमानता उस शहर के निवासियों की जीवन गुणवत्ता पर प्रभाव डालती है। नगर में व्याप्त होने वाली असमानताओं को आधारभूत ढांचे को मज़बूत करके दूर किया जा सकता है। ऐसे में प्रस्तुत शोध अध्ययन प्रासंगिक हो जाता है।

बिजनौर नगर की प्रमुख समस्याएं –

शोध अध्ययन में प्राप्त डेटा के विश्लेषण से बिजनौर नगर की प्रमुख समस्याओं के रूप में यातायात जाम, गंदगी, जलभराव, बिजली आपूर्ति, पेयजलापूर्ति की समस्या, शिक्षा सुविधाओं की कमी, स्वास्थ्य सुविधाओं की कमी, बेरोजगारी, प्रदूषण तथा खराब सड़क सामने आती हैं। (तालिका: 1)

तालिका: 1 बिजनौर नगर की मुख्य समस्याओं का प्रतिशत

क्रम संख्या	समस्या	उत्तरदाताओं की प्रतिक्रिया का प्रतिशत	क्रम संख्या	समस्या	उत्तरदाताओं की प्रतिक्रिया का प्रतिशत
1	यातायात जाम	42.1 %	6	शिक्षा सुविधा	15.8%

2	गंदगी	36.8%	**7**	स्वास्थ्य सुविधा	29.8%
3	जलभराव	40%	**8**	बेरोजगारी	49.1%
4	बिजली आपूर्ति	35.1%	**9**	प्रदूषण	31.6%
5	पेयजलापूर्ति	3.5%	**10**	खराब सड़क	49.1%

स्रोत – स्वयं एकत्र किए गए आंकड़ों के आधार पर

1. यातायात जाम की समस्या –

बिजनौर नगर का कुल क्षेत्रफल 11.68 वर्ग किलोमीटर है। (गूगल अर्थ, 2026) ऐसे में शहर के मुख्य चौराहे न्याय चौक, शक्ति चौक, नगरपालिका चौक, सेंट मैरीज चौक पर अक्सर जाम के हालात बन जाते हैं। बिजनौर शहर में 15 स्कूल हैं। सभी स्कूलों के खुलने तथा बन्द होने का एक ही समय होने के कारण सुबह एवं दोपहर के समय लगभग एक से डेढ़ घंटे का जाम लगना सामान्य बात है। इसके अलावा अधिकांश लोग प्रातः 9 से 10 बजे के बीच अपने- अपने कार्यस्थलों की ओर जाते हैं तथा शाम को 7 से 8 बजे के बीच में वापस लौटते हैं। लोगों को दोनों ही समय चौराहों पर भीषण यातायात जाम से जूझना पड़ता है। बाजार में अतिक्रमण की समस्या इसे और अधिक गहरा देती है। शहर में ई रिक्शाओं की अधिकता भी यातायात व्यवस्था को चरमरा देती है। यातायात प्रभारी रवि नैन के बयान के अनुसार शहर में 4000 ई रिक्शा के चलते सड़कों पर जाम की स्थिति बनती है। (अमर उजाला, 2026)। एक तरफ तो ये आवागमन के लिए सुविधा प्रदान करती हैं वहीं दूसरी ओर इनकी अनियंत्रित संख्या एवं उचित नियमों के अभाव में आए दिन इनसे जाम की स्थिति पैदा होती है।

एकत्र आंकड़ों में 42.1 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने स्वीकारा कि शहर अनियंत्रित जाम की स्थिति से जूझ रहा है। (तालिका:1) शहर के चारों ओर स्थित चक्कर रोड के द्वारा बड़े एवं अन्य शहरों के वाहनों को बाहर से ही डायवर्ट कर दिया गया है किन्तु आंतरिक वाहनों के लिए कोई ठोस नीति उपलब्ध नहीं है। यही कारण है कि स्थिति ज्यों की त्यों बनी रहती है। इससे ईंधन एवं समय दोनों की ही बर्बादी होती है। किसी भी नगर के विकास में भूमि का नियोजित उपयोग महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है। अतिक्रमण के कारण सड़कों की चौड़ाई कम हो जाती है। परिणामस्वरूप यातायात व्यवस्था पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। शक्ति चौराहे से शंभा बाजार तक, न्याय चौक से मंडावर चौराहे तक, विदुर कुटी रोड, चांदपुर रोड, नूरपुर रोड एवं रोडवेज के आस-पास के क्षेत्रों में अतिक्रमण की समस्या अत्यधिक है।

उत्तरदाताओं से सार्वजनिक परिवहन की पर्याप्त उपलब्धता के संबंध में पूछे गए प्रश्न का उत्तर 77.2 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने हां में दिया। 15.8 प्रतिशत लोगों ने माना कि शहर में सार्वजनिक परिवहन की सुविधा सीमित है तथा 7 प्रतिशत लोगों ने इस बात से असहमति जताई। (चित्र 1)

चित्र- 1 शहर में सार्वजनिक परिवहन की स्थिति

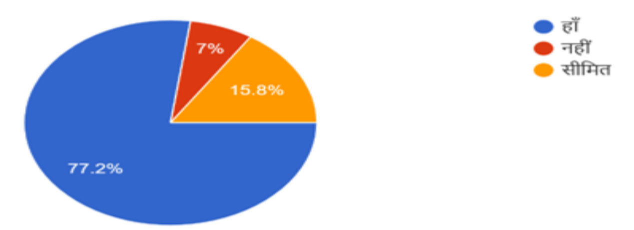

स्रोत- स्वयं एकत्र किए गए आंकड़ों के आधार पर

2. गंदगी की समस्या –

'स्वच्छ सर्वेक्षण 2024-25' की रिपोर्ट के अनुसार 50 हजार से 3 लाख की मध्यम आबादी वाले शहरों में प्रदेश में बिजनौर नगर पालिका परिषद ने 10,081 अंकों के साथ प्रदेश में पहला और इस श्रेणी के देश के 100 शहरों में 29 वां स्थान हासिल किया था। हालांकि इस उपलब्धि को बरकरार नहीं रखा जा सका। कालांतर में शहर में गंदगी की समस्या प्रमुखता से उभरी। दैनिक भास्कर में प्रकाशित एक रिपोर्ट के अनुसार मुस्लिम फंड

चौराहे और काशीराम कॉलोनी में भी गंदगी के ढेर देखे गए। यहां डस्टबिन छोटे और उल्टे पड़े हैं, कूड़ा चारों तरफ बिखरा है। जेल और राजकीय बालिका इंटर कॉलेज के पास भी कूड़े के ढेर में आग लगी हुई थी। (दैनिक भास्कर, 2025)। शोध अध्ययन में 36.8 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने माना कि मुख्य मार्गों को छोड़कर शहर में कई स्थान ऐसे हैं जहां जमा गंदगी विकराल रूप ले रही है।(तालिका:1)

वर्तमान में एक व्यक्ति प्रतिदिन 1.2 किलो कचरा पैदा करता है जो अगले 15 सालों में बढ़कर 1.42 किलो हो जाएगा। कचरे का उचित निस्तारण न होने पर त्वचा, श्वसन, जठर तंत्र, तथा वाहक रोगों का खतरा बढ़ जाता है। (डे और देबनाथ, 2016)। खुले कचरे से उठने वाली दुर्गंध एवं गंदगी के द्वारा अनेक संक्रामक रोग पैदा होते हैं। लोगों के सामने स्वस्थ जीवन एक चुनौती बन जाता है। दरअसल समस्या इसलिए अधिक बढ़ जाती है कि लोगों का मस्तिष्क घरेलू कचरे के निस्तारण संबंधी विचार के प्रति संवेदनशील ही नहीं है। हमारे दैनिक जीवन में प्रयोग होने वाली वस्तुएं विघटित होने में कम से कम एक सप्ताह और अधिकतम दस लाख साल तक लग सकते हैं।

तालिका 2 : वस्तुओं को विघटित होकर समाप्त होने में लगने वाला समय (EPA, 2013a)

वस्तु	विघटन का समय	वस्तु	विघटन का समय
पेपर टॉवल	2 से 4 सप्ताह	प्लास्टिक फिल्म का डिब्बा	20 से 30 वर्ष
समाचार पत्र	6 सप्ताह	टिन का डिब्बा	50 वर्ष
सेब का मध्य भाग	2 महीने	एल्यूमिनियम का डिब्बा	80 से 200 वर्ष
मोम लेपित दूध का डिब्बा	3 महीने	डिस्पोज़ेबल डाइपर	450 वर्ष
प्लाईवुड	1 से 3 वर्ष	कोल्ड्रिंक की बोतल	450 वर्ष
ऊनी मौजा	1 से 5 वर्ष	मोनोफिलामेंट मछली पकड़ने की डोरी	600 वर्ष
सिगरेट का टुकड़ा	1 से 5 वर्ष	कांच की बोतल	10 लाख वर्ष
प्लास्टिक की थैली	10 से 20 वर्ष		

स्रोत – यूनाइटेड स्टेट्स इन्वायरन्मेंटल प्रोटेक्शन एजेंसी

पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय के द्वारा जारी ठोस अपशिष्ट प्रबंधन नियम 2026 के अनुसार ठोस अपशिष्ट को आवश्यक रूप से कचरे के स्रोत पर ही चार भागों में विभाजित करना अनिवार्य होगा है। यथा गीला कचरा, सूखा कचरा, स्वच्छता संबंधी कचरा, विशेष देखभाल वाला कचरा। बिजनौर शहर में कचरे का विभाजन ठीक प्रकार से नहीं होता है। नगरपालिका का वाहन प्रत्येक घर से कचरा एकत्र करता है किंतु कचरे का विभाजन नहीं होने के कारण कचरे का उचित एवं पूर्ण निस्तारण नहीं हो पाता है। ऐसे में होता यह है कि एक स्थान से कचरा उठाकर दूसरे स्थान पर एकत्र कर दिया जाता है। जो लगातार एक ही स्थान पर पड़े होने के कारण मिट्टी, जल, वायु तीनों की ही गुणवत्ता को प्रभावित करता है।

3. जलभराव की समस्या – वर्षा काल में बिजनौर नगर के अनेक क्षेत्र जलभराव की समस्या से जूझते हैं। 40 प्रतिशत लोगों का मानना है कि शहर में जल निकासी की उचित व्यवस्था नहीं है। (तालिका:1) शहर की रिहाइशी कालोनी आवास विकास, नई बस्ती, सिविल लाइन जलभराव की समस्या से जूझते हैं। काजीपाड़ा, मिर्दगान, खत्रियान, कस्साबान, इरशाद कॉलोनी, जाटान आदि में भी बरसात के दिनों में जलभराव के कारण स्थिति खराब हो जाती है। 'शहर की एकमात्र सरकारी आवासीय कॉलोनी आवास विकास से हर बारिश के बाद आने वाली जलभराव की तस्वीरें बार बार उस कड़वी हकीकत को सामने ले आती है, जिससे यहां के निवासी पिछले लगभग चार दशकों से जूझ रहे हैं। साल बदलते है, दशक बदल जाते है, लेकिन हर बरसात के साथ हालात बदलने के बजाय वही पुराने दृश्य दोहराए जाते हैं।'(प्रयाण, 2026)

4. बिजली आपूर्ति की समस्या-

आधुनिक जीवन की आधारभूत जरूरत होने के बाद भी देश के मध्यम श्रेणी के नगरों में विद्युत आपूर्ति से जुड़ी अनेक समस्याएँ दृष्टिगोचर होती हैं। बिजनौर नगर भी बारम्बार बिजली कटौती, कम वोल्टेज, अधिक भार, पुरानी विद्युत अवसंरचना, बिजली चोरी, अवैध कनेक्शन के साथ ही तकनीकी एवं वाणिज्यिक हानियों से जूझता है। वर्षा, तेज आँधी और बाढ़ के चलते भी बिजली लाइनों के क्षतिग्रस्त हो जाने से आपूर्ति बाधित होती है। नगर में जनसंख्या वृद्धि के कारण बिजली की मांग लगातार बढ़ी है जिसके अनुपात में उत्पादन और वितरण क्षमता पर्याप्त नहीं होना भी बिजली संकट का बड़ा कारण बनता है। 35.1 प्रतिशत उत्तरदाता मानते हैं कि बिजनौर शहर में बिजली आपूर्ति ठीक नहीं है। (तालिका: 1) नगर में आवास विकास, शुगर मिल के सामने तथा विदुर कुटी मार्ग पर तीन बिजलीघर स्थापित होने के बाद भी गर्मियों के दिनों में यह स्थिति और भी खराब हो जाती है।

5. पेयजल की समस्या –

वसुंधरा विहार, एस डी पुरम, चौधरीपुरम आदि कालोनियों में नगरपालिका के द्वारा पेयजल की व्यवस्था नहीं की गई है। नगरवासियों को निजी स्रोतों जैसे सबमर्सिबल, जेट पम्प एवं हेंड पम्प आदि पर निर्भर रहना पड़ता है। बिजनौर में पेयजल की गुणवत्ता लगातार खराब हो रही है। पीने के पानी का टीडीएस 50 से 300 पीपीएम होना चाहिए (एरुन, 2025) किंतु शहर के अलग- अलग स्थानों से एकत्र किए गए आंकड़ों के आधार पर ज्ञात होता है कि शहर के पेयजल का टीडीएस 400 से 450 पीपीएम के मध्य है जबकि चीनी मिल के आसपास यह 450 तक चला जाता है। वर्ल्ड हेल्थ ऑर्गेनाइजेशन तथा यू एस एनवायरनमेंटल प्रोटेक्शन एजेंसी (2025) के अनुसार 500 पीपीएम से अधिक का पेयजल लगातार पीने में प्रयोग नहीं करना चाहिए। पेयजल संकट के यदि वैश्विक आंकड़ों पर दृष्टि डालें तो ज्ञात होता है कि 2021 में दो अरब से अधिक लोग जल संकटग्रस्त देशों में रहते हैं। इसके अतिरिक्त 2022 में विश्व में 1.7 अरब से अधिक लोग ऐसे पेयजल का प्रयोग करते हैं जो मल से दूषित था। (वर्ल्ड हेल्थ ऑर्गेनाइजेशन, 2025) उत्तरदाताओं में से 3.5 प्रतिशत लोगों ने पेयजल को समस्या माना। (तालिका: 1)

6. शिक्षा सुविधाओं की कमी –

वर्तमान में बिजनौर नगर में एकमात्र इंजीनियरिंग कॉलेज कुंवर सत्य वीरा कॉलेज ऑफ मैनेजमेंट एंड इंजीनियरिंग के साथ ही एक राजकीय पॉलिटेक्नीक उपलब्ध है। इसके अतिरिक्त रूट्स इंस्टिट्यूट ऑफ प्रोफेशनल एजुकेशन, वीर कुंवर इंस्टिट्यूट ऑफ टेक्नॉलजी शहर की सीमा से 8 से 10 किलोमीटर की दूरी पर स्थित हैं। हाल ही में विवेक ग्रुप ऑफ कॉलेज को डीम्ड यूनिवर्सिटी के रूप में संबद्धता मिली है। साथ ही एक मेडिकल कॉलेज बिजनौर से दस किलोमीटर दूर सवाहेड़ी गाँव में खोला गया है। उच्च शिक्षा क्षेत्र में रानी भाग्यवती देवी महिला महाविद्यालय, वर्धमान कॉलेज तथा कुंवर सत्य वीरा डिग्री कॉलेज प्रमुख केंद्र है। 15.8 प्रतिशत उत्तरदाता मानते हैं कि बिजनौर में शिक्षा सुविधाओं की कमी है। (तालिका:1) बिजनौर में केंद्रीय विद्यालय, मेडिकल कॉलेज, राजकीय इंजीनियरिंग कॉलेज एवं सरकारी विश्वविद्यालय का अभाव है।

तालिका: 3 बिजनौर शहर के शिक्षण संस्थान

शिक्षण संस्थान	संख्या
प्राथमिक/उच्च प्राथमिक विद्यालय	25
माध्यमिक/उच्च माध्यमिक (सरकारी)	7
माध्यमिक/उच्च माध्यमिक (प्राइवेट)	12
डिग्री कॉलेज	8
विश्वविद्यालय (डीम्ड विश्वविद्यालय)	1

स्रोत- स्वयं एकत्र किये गए आंकड़ों के आधार पर

शिक्षा की गुणवत्ता पर 49.1 प्रतिशत लोगों ने हां में प्रतिक्रिया दी। जबकि 43.9 प्रतिशत लोगों ने कहा कि शहर की शिक्षा की गुणवत्ता सामान्य है तथा 7 प्रतिशत लोगों ने बिजनौर में एक भी ए ग्रेड कॉलेज नहीं होने से माना कि शिक्षा की गुणवत्ता अच्छी नहीं है। (चित्र 2)

नगर में पुस्तकालय, सामुदायिक केंद्र की सुविधा पर मात्र 5.2 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने कहा कि वे इन सुविधाओं से बहुत संतुष्ट हैं। जबकि 38.6 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने कहा कि वे संतुष्ट हैं। 40.4 प्रतिशत लोगों ने कहा कि वे कम संतुष्ट हैं जबकि 15.8 प्रतिशत लोगों ने असंतुष्टि व्यक्त की। बिजनौर शहर में दुष्यंत पुस्तकालय एवं सांस्कृतिक केंद्र स्थित है। जिसमें पर्याप्त पुस्तकें उपलब्ध नहीं हैं। (चित्र 3)

चित्र- 2 शहर में शिक्षा की गुणवत्ता

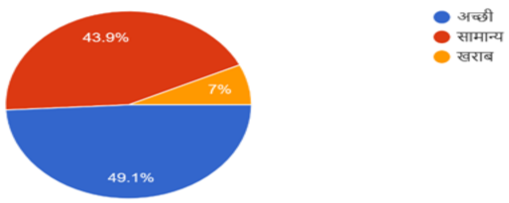

स्रोत- स्वयं एकत्र किए गए आंकड़ों के आधार

चित्र- 3 शहर में स्थित पुस्तकालय एवं सामुदायिक केंद्र जैसी सुविधाओं की स्थिति

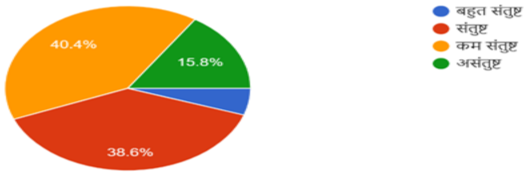

स्रोत- स्वयं एकत्र किए गए आंकड़ों के आधार पर

7. स्वास्थ्य सुविधाओं की कमी-

बिजनौर में 20 मल्टी सुपर स्पेशलिटी अस्पताल हैं। इनमें हीलर्स, कामख्या मल्टी सुपर स्पेशलिटी, आरोग्यम मल्टी सुपर स्पेशलिटी, तत्सव हेल्थकेयर मल्टी सुपर स्पेशलिटी, लाइफ़ लाइन, बीना प्रकाश, सिटी, संजीवनी, गोपाल, आयुष्मान, कैलाशवाती मेमोरियल तथा विवेक अस्पताल प्रमुख हैं। इसके साथ ही 200 पंजीकृत चिकित्सक उपलब्ध हैं। शोध अध्ययन से पता चलता है कि शहर में कोई अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान (एम्स) मौजूद नहीं है। निकटतम अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान के रूप में एम्स अस्पताल नई दिल्ली एवं ऋषिकेश (उत्तराखण्ड) में स्थित हैं। यही कारण है कि बिजनौर के मरीजों को गंभीर स्थिति में दिल्ली अथवा ऋषिकेश जाना पड़ता है। बिजनौर का जिला अस्पताल गंभीर मरीजों को त्वरित उपचार देने में असमर्थ है। शोध अध्ययन में उत्तरदाता प्रमुखता से स्वास्थ्य सुविधाओं की कमी की ओर ध्यान आकर्षित करते हैं।

शहर में सरकारी स्वास्थ्य सुविधाओं की स्थिति से संतुष्टि के प्रश्न पर 57. 9 प्रतिशत उत्तरदाता संतुष्ट नजर आए जबकि 28.1 प्रतिशत लोगों ने असंतोष जताया। शेष ने माना कि सरकारी स्वास्थ सुविधाएं आंशिक रूप से ठीक हैं। (चित्र 4)

चित्र- 4 शहर में सरकारी स्वास्थ्य सुविधाओं की उपलब्धता

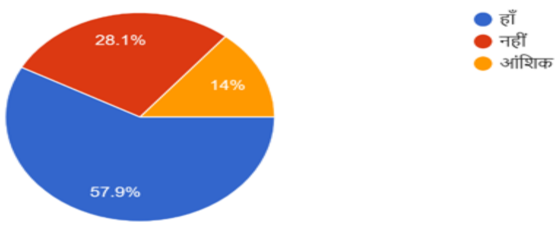

स्रोत- स्वयं एकत्र किए गए आंकड़ों के आधार पर

8. बेरोजगारी की समस्या-

भारत में बेरोजगारी की दर मई 2026 में 5.2 प्रतिशत दर्ज की गई। बिजनौर शहर भी बेरोजगारी से प्रभावित है। बिजनौर में बेरोजगारी की स्थिति राष्ट्रीय स्तर की तुलना में अच्छी नहीं है। इसका प्रमुख कारण यह है कि बिजनौर नगर में एक चीनी मिल के अतिरिक्त कोई बड़ा उद्योग नहीं है। बिजनौर शहर की अधिकांश जनसंख्या सेवा क्षेत्रों में लगी हुई है। रोज़गार के लिए लोग मुख्य रूप से अस्पताल, शिक्षण संस्थान बैंक, व्यवसाय आदि पर निर्भर हैं। लघु उद्योग के रूप में बेकरी, स्वर्ण एवं चांदी के आभूषण, मिट्टी के बर्तन बनाने के कार्य छोटे पैमाने पर किए जाते हैं। शहर में रहने वाले कुछ लोग प्राथमिक क्रिया के रूप में कृषि से भी जुड़े हुए हैं। बिजनौर में रहने वाले अधिकांश युवा काम की तलाश में दिल्ली, नोएडा, मेरठ, गुड़गांव

जैसे शहरों में पलायन करने को मजबूर हैं। शहर के कई लोग प्रतिदिन 150 किलोमीटर का सफर तय करके दिल्ली जाकर नौकरी करने को मजबूर हैं। शहर में रोजगार के पर्याप्त अवसर हैं या नहीं संबंधी प्रश्न पर 15.8 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने हां उत्तर दिया जबकि 50.9 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने नहीं में उत्तर दिए। जबकि 33.3 प्रतिशत उत्तरदाताओं के अनुसार शहर में रोजगार के अवसर बहुत कम हैं (चित्र 5)

तालिका संख्या 4 में वर्ष 1995 से वर्ष 2025 तक की बेरोजगारी दर दर्शायी गई है। जिससे स्पष्ट होता है कि वर्ष 1995 की तुलना में बेरोजगारी

चित्र- 5 शहर में रोजगार के अवसर

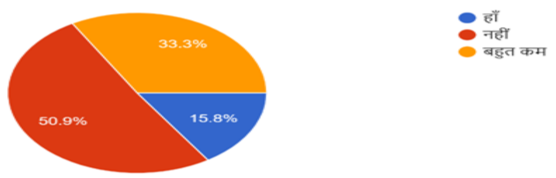

स्रोत- स्वयं एकत्र किए गए आंकड़ों के आधार पर

दर में कमी आयी है किन्तु 2024 की वर्ष की तुलना में वर्ष 2025 में .27 की वृद्धि हुई है।

तालिका: 4- 1995 से वर्ष 2025 तक की बेरोजगारी दर

वर्ष	बेरोजगारी दर प्रति वर्ष (% में) (% में)
1995	7.57
2000	7.59
2010	7.55
2015	7.63
2020	7.63
2025	4.21

स्रोत - मैक्रो ट्रेंड्स इंडियन एमपलोएमेन्ट रेट 1991- 2025

तालिका: 5 1995 से वर्ष 2025 तक युवा बेरोजगारी दर प्रति वर्ष

वर्ष	युवा बेरोजगारी दर प्रति वर्ष (% में)
2020	24.67
2021	20.82
2022	17.73
2023	15.60
2024	15.75
2025	16.02

स्रोत - मैक्रो ट्रेंड्स इंडियन एमपलोएमेन्ट रेट 1991- 2025

9. प्रदूषण की समस्या विकास एकतरफा नहीं होता। विकास की कीमत पर्यावरण को चुकानी पड़ती है। यह सच है हम विकास की राह में बहुत आगे निकल आए हैं किंतु यह भी सच है कि लगातार होते प्रकृति के दोहन ने हमारे सामने प्रदूषण जैसी भयावह समस्या भी पैदा की है। औद्योगिकीकरण, वाहनों की बढ़ती संख्या, निर्माण एवं विनिर्माण गतिविधियां, ठोस अपशिष्ट के अनुचित निस्तारण ने स्थल, जल और वायु को प्रदूषित कर दिया है। कचरे का पृथक्करण नहीं होने के कारण स्थल प्रदूषित हो रहा है। शहरों के सीवेज का पानी बिना किसी उपचार के नदियों में डाल दिया जाता है। साथ ही पेट्रोल, डीजल, कोयले पर ऊर्जा की निर्भरता ने वायु को जहरीले धुएं से भर दिया है। न केवल बड़े शहर बल्कि छोटे और पिछड़े शहर भी अब प्रदूषण की चपेट में हैं। केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड सीपीसीबी के आंकड़ों के अनुसार बिजनौर में वर्ष 2025 की जनवरी में एक्यूआई 249 तथा जुलाई 2026 में 84 तक रहा।

©The Research Dialogue | Received: 05 July 2026 | Accepted: 10 July 2026 | Published: 16 July 2026

वायु प्रदूषण के अतिरिक्त शहर में इधर-उधर पड़ा हुआ कचरा मिट्टी एवं जल दोनों को ही प्रदूषित कर रहा है। कचरे से उठने वाली दुर्गंध से एक ओर वायु प्रदूषित होती है तो दूसरी ओर वर्षा के जल के साथ मिलकर यह भूजल एवं नदियों को भी प्रदूषित करता है। शहर में ध्वनि प्रदूषण भी कम नहीं है। लाउडस्पीकर एवं चौराहों पर बजने वाले हॉर्न की आवाज़ निर्धारित सीमा से अधिक है। हालांकि शोध अध्ययन में लोग नगर के पर्यावरण को स्वास्थ्य के लिए अनुकूल मानते हैं। 64.9 प्रतिशत लोगों ने सहमति जताते हुए इसे उपयुक्त माना जबकि 24.6 प्रतिशत लोगों का मानना है कि पर्यावरण आंशिक रूप से अनुकूल है। शेष 10.5 प्रतिशत लोगों ने नहीं में उत्तर दिया। बिजनौर का वायु गुणवत्ता सूचकांक 100 के आसपास रहता है। (चित्र 6)

10. अन्य संसाधन एवं सुरक्षित परिवेश –

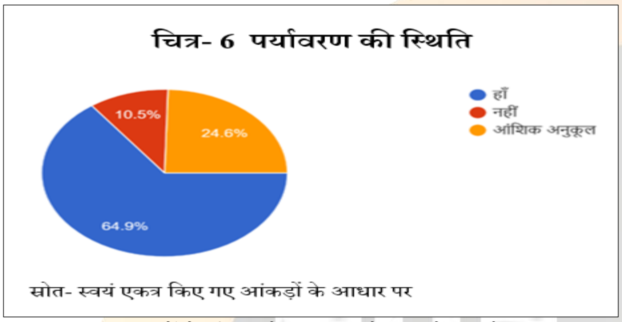

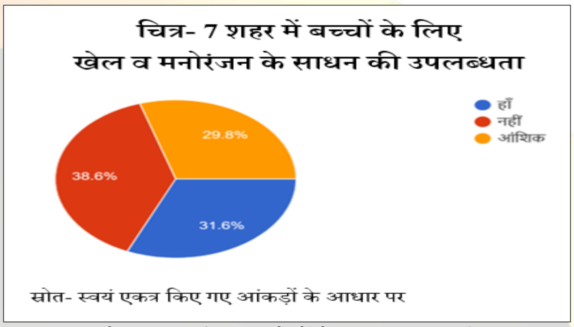

बच्चों के लिए खेल एवं मनोरंजन के पर्याप्त साधन की उपलब्धता को 31.6 प्रतिशत लोगों ने स्वीकारा जबकि 38.6 प्रतिशत लोगों ने नकारा। 29.8 प्रतिशत लोगों ने माना कि मनोरंजन के साधन आंशिक रूप से उपलब्ध है। यदि देखा जाए तो बिजनौर शहर में एक स्टेडियम (नेहरू स्टेडियम) एक सिनेमा हॉल (एस आर एस सिनेमा) उपलब्ध है। लगभग दो लाख की आबादी वाले शहर में अपेक्षाकृत अच्छी नहीं है। इंद्रा पार्क को छोड़कर शहर में कोई अन्य आधुनिक सुविधाओं से युक्त अच्छा नहीं है। (चित्र 7)।

शहर में जीवन यापन की लागत को 50.9 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने उचित माना किंतु 35.1 प्रतिशत उत्तरदाताओं का मानना है कि यह लागत थोड़ी अधिक है। जबकि 14 प्रतिशत उत्तरदाताओं का मानना है कि यह बहुत अधिक है। (चित्र 8)

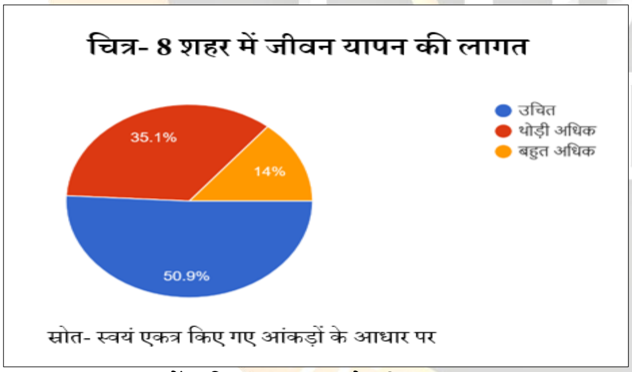

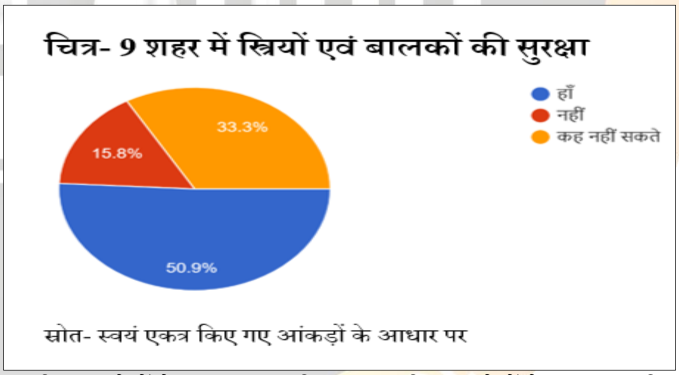

शहर में महिलाएं एवं बच्चे की सुरक्षा संबंधी प्रश्न पर 33.3 प्रतिशत लोगों ने हां कहा जबकि 15.8 प्रतिशत लोगों ने नहीं उत्तर दिया। इसके अलावा 50.9 प्रतिशत लोगों ने कोई प्रतिक्रिया नहीं दी। उन्होंने कह नहीं सकते विकल्प को चुना। (चित्र 9)।

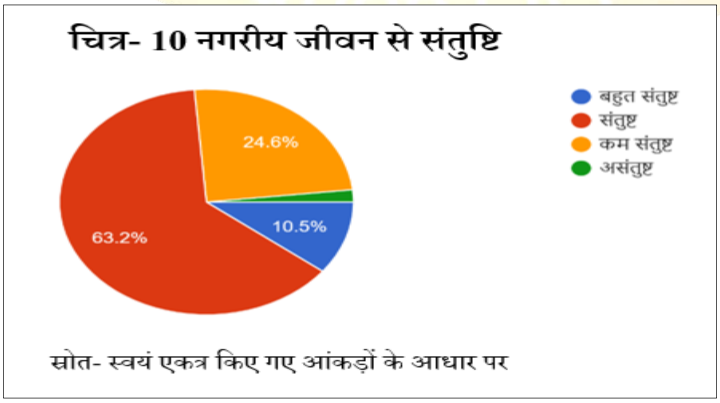

बिजनौर के नगरीय जीवन से संतुष्ट हैं इसपर 10.5 प्रतिशत लोगों ने बहुत संतुष्ट का विकल्प चुना जबकि 63.2 प्रतिशत लोगों संतुष्ट का। 24.6 प्रतिशत लोग नगरीय जीवन से कम संतुष्ट पाए गए जबकि 1.7 प्रतिशत लोगों ने उत्तर दिया कि वे नगरीय जीवन से असंतुष्ट हैं। (चित्र 10)

निष्कर्ष

प्रस्तुत शोध पत्र से यह स्पष्ट होता है कि शहर की समस्याओं का वैज्ञानिक निराकरण आवश्यक है। यदि नगर प्रशासन स्थानीय लोगों के साथ मिलकर कार्य करे तो निश्चित ही स्थिति बेहतर की जा सकती है। नगरीय सुविधाएं जहां एक ओर नागरिकों की जीवन की गुणवत्ता को बेहतर करने का कार्य करती हैं वहीं इनका अभाव जीवन को अनेक समस्याओं से भर देता है। बिजनौर छोटा सा किन्तु उभरता हुआ शहर है जिसमें भविष्य के विकास की पर्याप्त संभावनाएं विद्यमान हैं। हमें यह प्रयास करना होगा कि शिवालिक की तलहटी एवं मां गंगा के किनारे बसा यह शहर भविष्य में अपनी अनसुलझी समस्याओं के लिए नहीं बल्कि एक ऐसे मॉडल के रूप में जाना जाए जिसे जिसे देश दुनिया में पहचान मिले।

सुझाव

शोध अध्ययन में उत्तरदाताओं ने चिकित्सा सुविधा को बेहतर बनाने, ट्रैफिक जाम से निजात दिलाने, शहर को स्वच्छ करने, अतिक्रमण हटवाने,जलभराव की समस्या से निजात दिलाने, बच्चों के मनोरंजन एवं खेल के स्थान बनाने, शिक्षा गुणवत्ता को बढ़ाने, एक सरकारी विश्वविद्यालय बनाने की बात कही। इसके अतिरिक्त उत्तरदाताओं ने शहर में बंदरों के आतंक पर भी ध्यान आकर्षित किया। नगरपालिका के सहयोग से लोगों में नागरिकता बोध विकसित करके कचरे की समस्या से निजात पाई जा सकती है। सड़कों को चौड़ा करने के साथ ही अतिक्रमण हटवा कर एवं पर्याप्त पार्किंग सुविधा प्रदान कर यातायात जाम कम किया जा सकता है। इसी के साथ शहर में जगह-जगह वर्षा जल के संचयन से जलभराव की समस्या जड़ से खत्म हो सकती है। वायु प्रदूषण को कम करने के लिए अधिक से अधिक हरित क्षेत्रों का निर्माण किया जा सकता है। सप्ताह में एक या दो दिन साइकिल के प्रयोग से भी वायु स्वत: ही शुद्ध हो जाएगी। कॉलिनियों में 10 वर्ष से अधिक खाली पड़े प्लॉट एवं स्थानों पर पौधारोपण किया जा सकता है। छतों का प्रयोग सोलर पैनल लगाकर एवं लंबवत गार्डनिंग के लिए किया जा सकता है।

संदर्भ:

1. Office of the Registrar General & Census Commissioner, India. (2011). Census of India 2011: Provisional Totals. Retrieved July 12, 2026, from https:/censusindia.gov.in
2. State Election Commission, Uttar Pradesh. (n.d.). *Download ULB voter list.* https://sec.up.nic.in/site/VoterListULB.aspx
3. Bhagat, R. B. (2011). Emerging pattern of Urbanization in India. Economic and Political Weekly, 46 (34), 10-12
4. Ramchandran, R. (1997). Urbanization and urban systems in India. Oxford University Press
5. Kundu, A. (2011) Trends and Processes of Urbanization in India. International Institute of Environment and Development.
6. Singh, R.B. (2015) Urban Development and Quality of life in India, In R.B. Singh (Ed.), Urban Development challenges, risks and resilience in Asian mega cities (pp.1- 20). Springer.
7. T. Sadashivam (2016). Trends of Urbanization in India: Issues and Challenges in 21st Century. International journal of information Research, 03(05) 2375-2384
8. Kuddus, M.A., Tyan, E., & McBryde, E. (2020). Urbanization: A problem for the rich and the poor? Public Health Reviews, 41, Article. https:/doi.org/10.1186/s40985-019-0116-0
9. Google. (2026). Google Earth [Computer Software]. Retrieved June 27, 2026, from https://earth.google.com/

10. Amar Ujala. (2025, August 13). Retrieved July 12, 2026, from https://www.amarujala.com/uttar-pradesh/bijnor/traffic-plan-prepared-for-e-rickshaw-operation-in-the-city-four-routes-decided
11. Hindustan. (2025, July 18). Bijnor municipality tops cleanliness survey 2024–25 in UP with 10,081 points. Retrieved July 12, 2026, from https://www.livehindustan.com/uttar-pradesh/bijnor/story-bijnor-municipality-tops-cleanliness-survey-2024-25-in-up-with-10-081-points-201752789028867.html
12. Dainik Bhaskar. (2025, July 18). Dirt in Bijnor got first place in Swachh Survey. Retrieved July 12, 2026, from https://www.bhaskar.com/local/uttar-pradesh/bijnor/news/dirt-in-bijnor-got-first-place-in-swachh-survey-136234860.html
13. De, S., & Debnath, B. (2016). Prevalence of health hazards associated with solid waste disposal: A case study of Kolkata, India. Procedua Environmental Sciences, 35, 201- 208. https://doi.org/10.1016/j.proenv.2016.07.081
14. De, S., & Debnath, B. (2016). Prevalence of health hazards associated with solid waste disposal: A case study of Kolkata, India. Procedia Environmental Sciences, 35, 201- 208. https://doi.org/10.1016/j.proenv.2016.07.081
15. Environmental Protection Agency. (2013). Environmental Factoids. https://www.epa.gov/smm/wastewise/wrr/factoid.htm
16. Ministry of Environment, Forest and Climate Change. (2026, January 28). Solid Waste Management Rules, 2026 (Notification No. G. S. R. 388(E)), The Gazette of India, Extraordinary, Part II, Section 3, Sub-section (ii).https://uatsw.cpcb.gov.in
17. Prayan. (2026, July 9). बारिश..... और फिर सतह पर आ गई 40 वर्षों की बदहाली. Prayan, p.8
18. Erun Environmental Protection. (2025, February 24). What is a safe TDS level for drinking water? Ideal range & Health impact. Retrieved July 12, 2026, from https://www.erunwas.com/news-detail/id-108.html
19. World Health Organization.(2023) September 13. Drinking-water. Retrieved July 12, 2026, from https://www.who.int/news-room/fact-sheets/detail/drinking-water
20. MacroTrends.(n.d.).India Unemployment rate 1991-2024.Retrieved July 10, 2026, from https://www.macrotrends.net/datasets/global-metrics/countries/ind/india/unemployment-rate
21. Gupta, C. (2025, January 10). Top ten Indian cities with the worst and best AQI in 2025: Delhi remains stagnant at 'very poor' in Hapur. The Indian Express. Retrieved July 12, 2026, from https://indianexpress.com/article/trending/top-10-listing/top-10-indian-cities-with-the-best-and-worst-aqi-in-2025-9770731/
22. AQI.(n.d.). Bijnor Air Quality Index (AQI: Retrieved July 12, 2026, from https://www.aqi.in/in/dashboard/india/uttar-pradesh/bijnor

Cite this Article:

सैनी, ऋतु. सिंह, प्रो. महिपाल. (2026). नगरीकरण की समस्याओं का जीवन गुणता पर प्रभाव एवं उसके संभावित समाधानों का भौगोलिक अध्ययन: बिजनौर नगर के विशेष संदर्भ में. The Research Dialogue, 5(2), 279–290., Volume-05, Issue-02, July-2026.

DOI: https://doi.org/10.64880/theresearchdialogue.v5i2.29

This is an Open cess Journal / article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution License CC BY-NC-ND 3.0) which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited. All rights reserved.

Disclaimer/Publisher's Note: The views, findings, and opinions expressed in this publication are solely those of the author(s). The publisher and editorial team are not responsible for any errors, claims, or consequences arising from the use of the published content.

CERTIFICATE

of Publication

This Certificate is proudly presented to

ऋतु सैनी[1], प्रो. महिपाल सिंह[2]

For publication of Research Paper title

नगरीकरण की समस्याओं का जीवन गुणता पर प्रभाव एवं उसके संभावित समाधानों का भौगोलिक अध्ययन: बिजनौर नगर के विशेष संदर्भ में

Dialogue' Peer-Reviewed / Refereed Research Journal and E-ISSN: 2583-438X, Volume-05, Issue-02, Month July, Year-2026, Impact Factor (RPRI-4.73/ 6.79)

Dr. Lohans Kumar Kalyani
Editor- In-chief

Dr. Neeraj Yadav
Executive-In-Chief- Editor

Note: This E-Certificate is valid with published paper and the paper must be available online at: https://theresearchdialogue.com/

DOI : https://doi.org/10.64880/theresearchdialogue.v5i2.29